मसुर

1. **अररिया जिला हेतु उत्तम प्रभेद** :– HUL 57, अरुण, PM-5, मलिलका, शिवालिक
2. **बीज दर** :– छोटे दाने के लिए 30–35 Kg/ha.

   बड़े दाने के लिए 40–45 Kg/ha.

   पैरा क्राप के लिए 50–60 Kg/ha. प्रति हे० की दर से इस्तेमाल करना उचित एवं उत्तम हेगा।
3. **बीजोउपचार** :– बुआई से पूर्व 2 gm caption एवं राइजोवियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करना अत्यन्त आवश्यक हैं।
4. **खेत की तैयारी** :– धान कटाई की तुरंत बाद हल्की एवं उपरी भूमि में मसूर लगाना उत्तम उत्पादन के लिए उपयुक्त है। पहली जुताई मिट्ट पलध्अने वाली हल से एवं दूसरी जुताई कल्टीभेटर से कर खेत में पाटा लगाएं। उपचारित बीज को पंक्ति से पंक्ति 25 cm की दूरी तथा 10 cm पौधे से पौधे दमरी पर बुआई करना उपयुक्त होता है।
5. **उर्वरक प्रबन्धन** :–

   बुआई के समय 80 kg से 100 kg डी. ए. पी. या 250kg SSP (SSP प्रयोग करने की स्थिति 40kg urea का इस्तेमाल) प्रति हे० के समय करें।
6. **खरपत्तवार नियंत्रण** :– दो बार निकाई गुड़ाई करना जिसमें पहली 20 से 30 दिन के अन्दर एवं दूसरी 50–55 दिनोके अन्दर निकाई गुड़ाई करना आवश्यक होता है या रसायण द्वारा Pendametniline 30 Ec 3 लीटर प्रति हे० के दर से बुआई से 2 से 3 दिनों के अन्दर छिडकाव कर लेना चाहिए।
7. **सिंचाई प्रबन्धन** :– नमी की कमी होने पर ही पहली सिंचाई 40–50 दिनों के बाद एवं दूसरी फली बनने की अवस्था में कर लेना उत्तम होता है।
8. **कीट एवं रोग प्रबन्धन** :– मसूर की फली छोदक फलियो के हर दानो को खते है जिसके लिए लाइट ट्रैप एवं नीम 5 प्रतिशत बीज के दर से खेत में छिडकाव करना चाहिए या प्रोफेनोफोस 1 लीटर प्रति हे० की दर से छिडकाव किया जा सकता है। लाही कीट रस चूसने वाले कीट होते है जिसका नियंत्रण निम्बीस्लीन का नीम बीत 5 प्रतिशत की दर से 3 लीटर प्रति हे० की दर से छिडकाव करना उचित होता है। रसायनिक प्रबन्धन में इमिडाकलोरोबीड 250 एम.एल प्रति हे० के दर से छिडकाव करना उचित होता है।

   उकठा रोग :– प्रारम्भिक अवस्था में पत्तियां पीली हो जाना एवं पौधे का मुरझा जाना, सूख जाना एवं बढ़वार रुक जाना उकठा रोग के मुख्य पहचान हैं। इस स्थिति में 3–4 वर्ष का फलन चक्र अपनाना फायदे मंद होता हैं एवं ट्रायकोड्रमा 5 gm + कावोकिसन 1 gm प्रति किलो बीज की दर से बीजोउपचार करना फायदे मंद होता है। ऐसी स्थिति में 20–25 kg/ha जिंक सल्फेट छिड़काव करने पर रोग में अच्छा नियंत्रण नजर आता है।
9. **कटनी एवं भण्डारण** :– फलियो का पीला होना, कटनी के लिए तैयार है का मानक हो सकता है। पौधे को काटकर सूखने के लिए फैला दे उसके बाद ही दवनी करे।